आगरा किले की प्रतिरक्षा में दीवार एंव कंगूरों की भूमिका

डॉ0 (श्रीमती) विनीता यादव
एसोसिएट प्रोफेसर (चित्रकला)
दाऊदयाल महिला महाविद्यालय, फिरोजाबाद

आगरा किले की प्रतिरक्षात्मक दीवार नीचे से ऊपर कंगूरों के निकट तक सपाट बनाई गयी है। जिनमें स्थान–स्थान पर प्रहार छिद्र बने हुए है। यह प्रहार छिद्र तीन प्रकार के है प्रथम बन्दूक अथवा तीर के प्रहार करने हेतु–यह छिद्र लम्बे हैं तथा तिरछे नीचे की ओर खुलते है। द्वितीय–तोपों से गोले बरसाने वाले छिद्र–यह छिद्र चौकोर खिड़की के समान है और बाहर की तरफ चारों ओर को बडे होते हैं जबकि बन्दूक से प्रहार करने वाले छिद्र बाहर से छोटे और अन्दर से बड़े हेाते है। तृतीय–तरल पदार्थ छोड़ने वाले छिद्र–यह छिद्र ऊपर से नीचे की ओर पर्याप्त तिरछे हैं और आगे से मन्दिरों के नुकीले शिखर की भॉति छोटे–छोटे आकार से ढके है।

जिन कंगूरों में यह छिद्र बनाये गये हैं उनकी रचना में भिन्नता दिखाई देती है। आगरा किले के कंगूरे सपाट, नुकीले, महराव के समान बनाये गये हैं, जो सपाट कमल की पंखडियों के समान प्रतीत होते है। आगरा किला के दीवान–ए–खास में कंगूरों में तीन भीतर की ओर तथा एक बाहर की ओर चाप बनाकर इनका रूप अलंकृत किया गया है परन्तु अकबर तथा जहॉगीर के समय में इनका प्रयोग प्रचुरता से भवन के द्वारों में भी हुआ है और कंगूरों में भी जैसा कि आगरा के खास–महल से स्पष्ट है। औंरगंजेब के समय में किले के बाहर बनायी गयी छोटी प्रतिरक्षात्मक दीवार के कंगूरे भिन्न प्रकार के बनाये गये है। यह खुरदरा प्रभाव उत्पन्न न करके एक सपाट सरलता का प्रभाव उत्पन्न करते है। इस प्रकार यह औरगंजेब की सादगी के सूचक है।

आगरा किले की प्रतिरक्षात्मक दीवार स्थान–स्थान पर आगे निकले हुए बुर्जो से युक्त है। यह बुर्ज मुख्यतः किले की बहुत ऊॅची और लम्बी दीवारों को गिरने से रोकने की आवश्यकता के आधार पर दुर्ग निर्माण कला में विकसित हुए थे। यह बुर्ज अधिकांश स्थानों पर गोल बने हुए हैं परन्तु आगरा किले की औरगंजेब द्वारा निर्मित दीवार में आठ पहलू हैं। अकबर ने भी आगरा किले के दिल्ली द्वार के दोनों ओर के दो मन्जिले बुर्ज अठपहलू आकार के ही बनबाये गये थे। आगरा किले में अकबरी–महल की सम्पूर्ण इमारत हिन्दू वास्तु शैली के आधार पर निर्मित है। इसका प्रवेश द्वार आदि

तो नष्ट हो चुके हैं इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि यह कैसा रहा होगा परन्तु जिन भीतरी भवनों के अंश बचे हैं उस सभी में मुख्य कमरों की छतों से युक्त हैं, और सभी भवनों के दरवाजे सिरदलों के द्वारा निर्मित हैं इन भवनों में जो बरामदे, दालान अथवा हॉल बने हैं उनमें स्तम्भ और उनके ऊपर के सिरदल आदि भारतीय पद्धति की वास्तु में ही बनाये गये हैं। जहॉगीरी महल के भवन भी भारतीय वास्तु शैली की पद्धति को प्रस्तुत करते हैं।

इनमें प्रायः चौकोर स्तम्भों का ही प्रयोग किया गया है। जहॉगीरी महल का भोजन कक्ष और संगीत मण्डप हिन्दू शैली का अनुपम उदाहरण हैं जिसमें छत को गोल अथवा महरावदार व बनाकर सपाट बनाया गया है। और उसे तिरछे शहतीरों द्वारा रोका गया है। इसी प्रकार जहॉगीरी भवन की निचली मन्जिल का मुख्य निवास कक्ष किसी हिन्दू मन्दिर अथवा राज प्रासाद का ही एक भाग प्रतीत होता है।

आगरा किला की अन्य अनेक इमारतों में भी इसी प्रकार भारतीय वास्तु शैली का आकार दिखायी देता है। सम्मन बुर्ज के स्तम्भ इसके सुन्दर उदाहरण हैं। फिर भी जहॉ तक सम्भव हुआ है। तत्कालीन वास्तुकारों ने हिन्दू तथा मुस्लिम शैलियों के समन्वय का प्रयत्न इस किले में किया गया है। भारतीय वास्तु में चौकोर, अठपहलू अथवा गोल सभी प्रकार के स्तम्भों का प्रयोग होता आया है। प्राचीन मन्दिरों तथा गुफाओं में स्थापत्य में हम इसके उदाहरण देख सकते हैं, परन्तु भारतीय वास्तुकारों की इन स्तम्भों के शीर्ष भागों को अथवा कभी कभी निचले भागों को भी अत्यधिक अलंकृत करने की जो प्रवृत्ति थी या उसमें पशुओं, राक्षसों, व्याल आदि विचित्र तथा काल्पनिक आकृतियॉ अथवा गन्धर्वों आदि को उत्कीर्ण करने की जो परम्परा थी। वह परम्परा यहॉ आकार बिल्कुल समाप्त हो गयी है।

भवनों तथा वरामदों की योजना में हिन्दू अथवा जैन शैली के प्रभाव से स्तम्भों का विन्यास भी प्रभावित हुआ है। खम्भों के एक ही स्थान पर दो–दो अथवा चार–चार के युग्म खडा करना प्राचीन भारतीय परम्परा में है। आगरा किले के जहॉगीरी महल के मुख्य कक्ष के दरवाजे में भीतर की ओर एक साथ चार या पॉच खम्भे जुडे होने का भ्रम पैदा किया गया है जो कि उनके ऊपर लगे तोदों से पूर्ण स्पष्ट होता है। आगरा किले के दीवान–ए–आम के भवन में कोनों पर चार–चार खम्भों के युग्म स्थापित किए गए है जबकि बीच में दो–दो खम्भे एक साथ बनाये गये है।

भारतीय वास्तु में सभी भवन स्तम्भों तथा सिरदलों के तोरणों से निर्मित द्वारों से अलंकृत हैं किन्तु किसी भी भवन में इतने विशाल द्वार नहीं हैं, जितने कि मस्जिदों तथा भवनों में बनाये गये है। सम्भवतः यह एक बहुत बडा कारण था जिससे कि विजेता के रूप में अपना प्रभाव जमाने की दृष्टि से मुस्लिम शासकों ने विशाल भवनों का निर्माण कराया, जिसके महरावदार दरवाजों की अभियन्तता सामने आयी, अतः आरम्भिक मुस्लिम स्थापत्य में प्रवेश द्वार तो महरावदार बने है किन्तु अन्य सभी छोटे छोटे भवन परम्परागत भारतीय स्थापत्य की शैली में ही निर्मित हुए है। लाल किला आगरा में द्वारों की व्यवस्था में इन दोनों शैलियों का साथ–साथ प्रयोग मिलता है। इनके भवनों का स्थापत्य परम्परागत भारतीय पद्धति का ही है।

आगरा के भवनों के गुम्बद या तो लाल पत्थर से निर्मित हैं या कुछ शाही भवनों के गुम्बन्द धातुओं से मढ़े हुए हैं। आगरा किले के भवनों में जालीदार झरोखे केवल उन्हीं भवनों में हैं, जो शाहजहॉ कालीन हैं या फिर कुछ ऐसे विशेष स्थानों पर हैं जैसे–जहॉगीरी महल तथा दीवान–ए–आम आगरा किले के प्रवेश द्वारों, अकबरी महल तथा जहॉगीरी महल का निर्माण अकबर के समय में हुआ। इनकी निर्माण शैली में हिन्दू तत्व प्रमुख हैं, इस्लामी तत्व गौड है। परन्तु विशाल आकार वाले नुकीले महराव के कारण सामान्य प्रभाव में यह भवन मुस्लिम शैली के लगते है। प्रवेश द्वारों के दोनों ओर अष्टभुजी बुर्ज के अलंकरण में मुख्यतः ज्यामितीय आलेखन बनाये गये हैं। शेष सभी भवनों में दीवारों पर स्तम्भों पर तथा छत में विभिन्न प्रकार के अलंकरण जैन, बौद्ध, हिन्दू तथा मुस्लिम सभी प्रकार है। संगमरमर तथा अन्य प्रकार के रंगीन पत्थरों की जड़ाई का काम केवल प्रवेश द्वारों में है, भीतर नहीं। सर्वत्र चूने के गचके प्लास्टर में उभरी हुई नक्काशी भी की गयी है। अनेक प्रकार के सुन्दर प्राकृतिक तथा काल्पनिक बेल–बूटे भी चित्रित है।

Referances

1. 1880, Budaun Archceological Survey of India vol XI, Edward, S.M. and Garrot. Mughul rule in India, London 1930
2. कुमारस्वामी,ए .के. (1923) इन्ट्रोडक्शन टू इण्डियन आर्ट (मद्रास)